अथ नायक वर्णना ।। दृढ़ · दूर · दुष्कर · लम्ब · लक्ष · [१३ ख] छिद्र · छहु / गुणे सम्पूर्ण सूर्यवंश · सोमवंश · दुओ ये धनुर्व्वेद सँ कुशल · अञ्जन · गुटिका · पादुका · रस · परस · खड्ग[1] · वेताल · यक्षिणी · आठहु ये उपसिद्धि तें समन्वित । / स्तम्भन · मोहन · वशीकरण · उच्चाटन · मारन[2] · विद्वेषकरण · प्रक्षोभण · आकर्षण · आठओ ये प्राकृतसिद्धि ताक कुशल · । अणिमा · महिमा · गरिमा / लघिमा · उशिद्ध[3] · वशिद्ध[4] · प्राकाम्य · कामावशायिता[5] · आठओ जे महासिद्धि तंक पारग · । शर · शल[6] · शक्ति · सेल्ल · सब्बन · परिघ · परशु · पाश · / पट्टीश[7] · खडग · भुशुण्डी · भिन्दि · पानादि[8] ये छत्तीस पानायुध[9] ओ दण्डायुध तंक कृताभ्यास् · । अश्वशिक्षा · गजशिक्षा · स्त्रीचरित्र · सान्तन · ज्यो/तिष · वैद्यक · चूडामणि · इन्द्रजाल · आकरज्ञान · रत्नपरीक्षा · तौर्य्यत्रिक · वीणावाद्य · हरमेषला · अश्ववन्ध · गजवन्ध · मृगवन्ध · मीनवन्ध · लीनवन्ध · चट/ ....

....

[१६ क] सीनता[10] दुर्गरक्षा · दुर्गप्रवेश · व्यसन · परीहार · आत्मरक्षा · म [·] न्त्रगोपन · राजवश्यता · भृत्यभरण · उपजाप · सेनाप्रचार · देशरक्षा · बलाबलज्ञा [न को] षसञ्चय · व्युहरचना[11] · व्युहप्रवेश · व्युहभङ्ग · शंशय[12] विचारादि चारासिउ ये राजनीति ताक तत्वज्ञ · । दया · दान · दाक्षिण्य · विनय · सेव/न · आहरण · आश्वास · इङ्गितज्ञान · कौशल · सौहृद · उपचार · धर्म्मज्ञता · अनालस्य · साहस · सौवच · सदाचार · सन्तोष · नीति/ज्ञान · सभापाटव · ऊह · आपोह[13] · वितर्क्क · छिद्रान्वेषणादि वहुत ये

१. खड्ग । २. मारण । ३. ईशित्व । ४. वशित्व । ५. कामावसायिता । ६. शूल । ७. पट्टिश । ८. भिन्दिपालादि । ९. पालायुद्ध । १० उदासीनता । ११. व्यूह । १२. संशय । १३. अपोह ।

शिष्टधर्म्मं तें संयुक्त · । सात्विक · सुशील · सत्यसन्ध · सज्जन · / सुजाति · शास्त्रज्ञ · सेवक · सुवेष · शुद्ध · सुन्दर · सानुवन्ध · सुवचन · साचार · सकरुण · तेरहओ ये उपनायक गुण तें संपूर्ण्ण शिष्ट देषु ॥ ॥

[१६ ख] [अथ नायिका] वर्ण्णना ॥ उज्वल[1] · कोमल · लोहित · सम · सुतल · सालङ्कार · पञ्चगुण संपूर्ण्ण चरण · अकठिन · सुकुमार · गजहस्तप्राय · जानुयुगल · पीन · मांसल · कू/र्म्म-पृष्ठाकार श्रोणी · गम्भीर दक्षिणावर्त्त मण्डलाकृति · नाभि · क्षीण · सुकुमार · वलित · तिनि गुणे समन्वित मुष्टिग्राह्य · वेकण्ड · श्याम स/दृश[2] · सुकुमार · सुषम[3] · सुवेष · दीर्घ · छहु गुणे संपूर्ण्ण नोमलता[4] · । निम्मंख[5] · निरन्तराय · पीन · कठिन · उत्तुङ्ग · वर्त्तुल छहु गुणे संपूर्ण्ण पयो/धर । विशाल · वलित · विशलताकार · वांह · सुकुमार · अनुरक्त · निर्म्मल् · ललित · रक्ताशोकपल्लवप्राय · हाथ । तूल · कोमलप्राय ति/नि रेखा समन्विति ग्रीवा · । कोमल · कुटिल · कुण्डलित · कनकाभरणभूषित · कान · । सम · सुपंक्ति · सराग[6] · सुव्यक्त · सदृश[7] · सदीप्त[8] · सुरक्त · सा · × × × × / ....

[१८क] खुटी · सिङ्कली · सूता · एकवाली · चूलि · वलया · मेषला · त्रिका · पद्मसूत्र · सवन (सरल ?) · कङ्कण · नूपुर प्रभृति अनेक अलङ्कार कएले · कइसनि देषु · ॥ जनि कामदेव संसार जिनि आएल · / तकरि पताका · । जनि एकर रूप देयकें इन्द्र सहस्राक्ष भेलाह · ब्रह्माञो चतुर्म्मुख कए हलु · जनि एहि आलिङ्गए लागि एक कृष्ण चतुर्भूज भए गेलाह / / ॥ ॥

१. उज्ज्वल । २. मसृण । ३. सूक्ष्म । ४. लोम । ५. निसुंख । ६. सुराग । ७. मसृण । ८. सुदीप्त ।

अथ सखीवर्ण्णना ॥ पूर्णिमाक चान्द अमृत पूरल अइसन मुह । श्वेत पङ्कजकाँ दल भ्रमर वयिसल अइसन आँषि · काजरक कल्लोल अइ/सन भञ्हु · गथले] फुले नर्म्मदाक शलाका[1] पूजल अइसन षोम्पा · परवाक[2] पल्लव अइसन · अधर · कनिअराक कर अइसन नाक · सीन्दुर मो/ति लोटाएल अइसन दान्त । वेतक साट अइसन वाँह · पारिजातक पल्लव अइसन हाथ · छोलङ्ग छोलल अइसन पयोधर · काञ्चिवरली अइसन आगक (=आङ्गक) वान · अङ्कुरु[3] (=डमरु ?)/ [१८ख] क माझा अइसन वेकण्ड · काकहक को × × अइसन जाँघ × विकशित स्थलपद्म अइसन चरण · सर्व्वगुण संपूर्ण्ण उपालम्भ · विनोद मण्डन · सङ्गमशिक्षा · वीराभ्यास · छओ ये सखीक/र्म्म तेँ कुशल · । नायिकाक दोसर शरीर अइसन × श्यामाजाति सखी ॥ अपरः प्रकारः । सहजन्या · चित्रलेखा · घृताची · उर्व्वशी · मेनका · रम्भा · ति/लोत्तमा · देवजानी · इ ये आठओ नायिका अधिकहु सेहओ मन्दि होथि जकरे रूपे · । पुनु कयिसनि नायिका · । कामदेवक नगर अइसन शरीर/ निष्कलङ्क चान्द अइसन मुह · कन्दल खञ्जरीट अइसन लोचन । यमुनाक तरङ्ग अइसन भञ्हु · साँकरक शलाका अइसन नाक · सोनाक सी/प अइसन कान · अन्धकार-लता अइसनि विरनी · पालक वि [.] व[4] अइसन अधर · सहजे दालिव फुटल अइसन दान्त · कामदेवक पाश अइसन वाहु · निलहि[5] (? लोहित) पद्म अ/

... .

... .

१. शिला । २. पबराक । ३. डमरु । ४. बिम्ब । ५. लोहित ।

[२० क] [ख] ञ्जरीटयुगलप्राय लोचन : वक्र वलित घन · श्याम दीर्घ : कन्दर्प्पकोदण्डप्राय भ्रूयगल · चतुरस्र : चतुरङ्गुल[1] · कनकपट्टिका सुन्दर · निराल · सकुर · सरल सदृश[2] · / [सि]न्दुर दत्ति (= णिड)कालङ्कृत सीमन्त · सुरभि · स्निग्ध · प्रचुर · घन · कुञ्चित सुकुमार · सूक्ष्म · श्याम · सुसंयत · सकुसुम केशपाल · सुशीला · लज्जावती / × × विलासवती / गौराङ्गी · चन्द्रमुखी · गीतप्रिया · मधुरस्वरा · शिल्पवक्र (द्व) (=०वती; ०वक्त्री) · मृदु भाषिणी · कलावती · कृष्णदेहा · चित्रवसना · अङ्गरागवती · व्रीलायुता · सर्व्वा / [ङ्ग] संपूर्ण्ण चित्रीणी[3] जाति नायिका ।॥ अपरः प्रकारः ॥ स्वर्ग · मर्त्य · पातालक सौन्दर्य एकजाति नायिका व्रडे प्रणिधाने विधाताहुँ नायक स / × × एकेँ अपूर्व्व विश्वकर्म्माञेँ निर्म्मउलि याक मुखक शोभा देषि पद्में जलप्रवेश कएल : आँषिक शोभा देषि हरिण वण गेल · केशक शोभा देषि चमरी प / [२०ख] [लायन कए] ल · दाँतक शोभा देषि तालिबें[4] हृदय वीदीर्ण्ण[5] कएल · अधरक शोभा देषि प्रवाल द्विपान्तर[6] गेल · काँनक शोभा देषि वौद्ध ध्यानस्थित भेल · कण्ठक शो / [भा दे] षि कम्वु समद्रप्रवेश कएल · स्तनक शोभा देषि चक्रवाक उछन्न भेल · । वाहुयुगलक शोभा देषि पद्मक नाल पङ्कनिमग्न भेल · हाथक शोभा देषि / × × × क पल्लव ग्रस्त[7] (? त्रस्त) भेल · जंघयुगलक शोभा देषि कदलीं विपरीत गति कइलि · चरणक शोभा देषि स्थलकमलें निकुञ्ज आश्रय कएल · एवम्विध रत्ना[8] / × × × × संयुक्त त्रिभूवनमोहिनी[9] देषु । अपरः प्रकारः । कन्दलित तारुण्य · अपगत वाल्य · उद्भूत अभिलाष ·

---

१. चतुरङ्गुल । २. मसृण । ३. चित्रिणी । ४. दालिबें । ५. विदीर्ण । ६. द्वीपान्तर । ७. त्रस्त । ८. रत्नालङ्कार । ९. त्रिभूवन ।

अपगति[1] लज्जा · जागरुक भाव · अङ्कुरित / × × × एवम्बिध नायिका · । कुण्डल दुइ रत्नमण्डित त(क)रौं कान कइसन देषु · । जनि कामदेवकाँ रथैं चक्रदुइ जोल्ल अछ · सोनाक डोरें मध्यभाग बाँधल कइ / [२१क] सन · देषु · । जनि सौन्दर्यक तुलापुरुष काछल[2] बान्धल अछ · विचित्राम्बरक फुरहुरा कइसन देषु · जनि काञ्चनगिरिकाँ श्रृङ्ग मयूर नचइते अछ · नूपुर दुइ शब्दा / यमान ताकाँ कइसन देषु · जनि त्रिभूवनमोहनी[3] मन्त्र जपइते अछ । शोभा · विलास · भाव · हाव · गीत नृत्य · वाद्य · विनय · शील · आवर्ज्जन · पेश / लता · रूपातिशय · लज्जा · त्रयोदश गुणे संयुक्ति भद्राजाति नायिका देषु ॥

[4]॥ इति श्री कविशेषराचार्य ज्योतिरीश्वरविरचिते वर्ण्णरत्नाक/रो [० रे नायिका वर्ण्णनानाम] नाम द्वितीयः कल्लोलः ॥

अथ नायिका हास्यवर्ण्णना ॥ कुमुद · कुन्द · कदम्ब · कास · भास · कैलाश · कर्प्पूर · पीयूषक कानि[5] (= कान्ति) प्रसारीसन · क्षीरसमुद्रक दक्षिणानिले चालल तरङ्ग क लहरी अइसन · अमृतक सरोवर तरङ्गक सहोदर सन · शरतक पूर्ण्णिमाचान्दक ज्योत्स्ना अइसन · अभिन / [२१ ख] व प्रकशित कमलकोष प्रसारि[6] शोभा सन · कन्दर्प्पक दर्प्पप्रकासन सन · त्रैलोक्यक नागरजन युवजन हृदयमोहन मन्त्रसन · स्वेद · स्तम्भ · नोमाञ्च[7] · स्वरभङ्ग · कम्प · वैवर्ण्य · अश्रु/प्रलय इ ये आठओ सात्त्विक भाव ताक भण्डार सन · संयमित योगिजनक मननिधान[8] सन · मादन · उन्मादन · प्रक्षोभन[9] ·

---

१. उपगति । २. काञ्चन । ३. त्रिभुवन । ४. एतएसँ दू पंक्ति काटल अछि ।
५. कान्ति । ६. प्रसार । ७. लोमाञ्च = रोमाञ्च । ८. प्रणिधान ।
९. प्रक्षोभण ।

संयोजन · सम्मोहन · इ ये / कन्दर्प्पक पाँचओ वाणगुण ताक सन्धानशक्ति सन · मोहनता · प्रकशिता · वसिता · उत्साहिता · एवम्विध रस प्रकाशयिते चलोक्यओ वश करइते / नाय[1] (=नायिका) जनह (ा)स्य संचारइते देषु ॥

॥ इति कविशेषराचार्य श्रीज्योति(री)श्वरविरचिते वर्ण्णरत्नाकरे नायिकावर्ण्णनो नाम द्वितीयः कल्लोलः ॥ / ॥ -०-॥

अथ स्थान[2]वर्ण्णना ॥ भूपाल् · मण्डलीक · सामन्त · सेनापति · वँशिक[3] · राजपुत्र · राजशिष्ट · वउलिआ · पुरपति · सेवक · परिचारक · आज्ञापाल · धर्म्मशिष्ट प्रभु [२२क [ति अनेक लोकमण्डित स्थान देषु । तंकाँ मध्य सिंहासनावस्थित सर्व्वगुणसंपूर्ण्ण राजा देषु । अनन्तर लान[4] (=लाल) · चोल · डाहाल · चौहान · नेपाल · गौन[5] (=गौल) · मोट · काण्णाट श्री/हट्ट · बीरकोङ्कण · कामरूप · उत्कल · सिंहल · मालव · मरार · गुञ्जर · मल्लिवार · महारष्ट्र[6] · जरासिन्ध · अयोध्या · मगध · वेशनावर · प्रभृति ये अनेक राष्ट्रक / राजा तन्हिक शिष्ट · सेवाँ वइसल छथि · साधु · स्वाध्यायिक सानुवाह · यशवाहन · सुबुधि · सएआन · सारथ · सिंहल · मालकार · गन्धवनिक · रत्नपरीक्षक / वेलवार · वामन प्रभृति अनेक वनिकपुत्र यँ वइसल छथि · पुनु कइसन · राजकुमार शिष्टपुत्र · क्षत्रियपुत्र · अश्ववाहक · गजवाहक · महराज द्वारिक · दश/ञ्ञाधि · पनिहार[7] (=पलिहार) · अधक · अगहरा · रौतपति · प्रतिहार · प्रभृति अनेक राजोपजीवक लोक तेँ मण्डित स्थान देषु ॥ अपरः प्रकारः ॥ मन्त्री · पुरोहित · धर्म्माधिकरणि[8] / [२२ ख] सान्धिविग्रहिक · महामहत्तक · सेनापति · युवराज · नायक प्रतिवल · करणाध्यक्ष · शान्तिकरणिक · स्थानान्तरिक · राजगुरु · राजवल्लभ ·

१. नायक । २. आस्थान° । ३. वैदेशिक । ४. लाल । ५. गौल । ६. महाराष्ट्र । ७. पलिहार । ८. धर्माधिकरणिक ।

जोहारि—प्रणाम; मिलाउ तुलसीदास—**करहि प्रनाम जोहारि-जोहारी**। केओ कहैत अछि लैह, केओ कहैत अछि देह। **तोरह**—तोलह अर्थात् तौलह। **बराबह**—फुटा क' राखह। केओ व्यापारी विचार करैत अछि जे **सम** भेल अर्थात् ने हानि ने लाभ, बराबरिक बराबरि; केओ कहैत अछि **भल** (लाभ) भेल; केओ कहैत अछि जे **मन्द** (अधलाह, हानि) भेल। **मरीच ऐसन**—मरीचक बराबरि, अत्यल्प। बजारमे नाना देशसँ आयल लोक स्वभावतः नाना राज्यक कहिनी (गप्प) कहैत अछि। एतय बड़सग आदि बारह गोट जे राज्य गनाओल गेल अछि ताहिमे एको परिचित नहि। एकरा बाद पुनः नाच-गानक चर्चा आयल। आचार्य रमानाथ झा (प्रबन्ध-संग्रह, पृ० ३९) वेलि वा वेणिकेँ बिरहा जेकाँ लोकगीतक **प्रभेद** कहलनि अछि। हुनका मतेँ "चुट्कुल" तँ प्रायः एखन जकरा चुटकुला कहैत छिऐक सएह थिक। एकर आशय भेल छोट मनोरञ्जक गप्प वा फकड़ा। **प्रतिगीत** सँ प्रतीत होइत अछि गीतमे उत्तर-प्रत्युत्तर जेना सम्प्रति जटा-जटिनक खेलमे होइत अछि। परन्तु हम हुलुक ओ चुट्कुलकेँ बाजा मानैत छी। हलुक थिक हुडुक्क, एक मृदङ्गसदृश वाद्य (दे० भासंवा० पृ० ६५)। एकरा बाद मद्यपायीक दुरवस्था वर्णित अछि। मद्य लगलासँ केओ गारि द' रहल अछि, केओ क्रन्दन क' रहल अछि, केओ झगड़ा होइत देखि घरहेरि क' रहल अछि। ककरहु चोट लगैत छैक, केओ निष्क्रिय भ' शान्त भ गेल अछि, केओ हँसि रहल अछि, केओ करुणा क' रहल अछि, केओ ककरहु आलिङ्गन क' रहल अछि तँ ककरहुँ प्रणाम। केओ असम्भ्रम (बेहोसी)मे पड़ल अछि, केओ बोकरैत, वमन करैत अछि, केओ विरेचन (मलत्याग) करैत अछि तँ केओ लगही (लघुशङ्का); केओ भूगत (माटिमे लेटायल) अछि।

द्वितीय कल्लोल

21·1—**अथ नायक वर्णना**·········**महासिद्धि तंक गारग।**

आब नायकक (राजाक) वर्णन कयल जाइत अछि। पहिल वाक्य गड़बड़ अछि। दृढ़, दूर आदि छओ गुण कहल गेल अछि से दुर्गक गुण भ' सकैत अछि, राजाक नहि। सम्भवतः ई वाक्य दुर्गवर्णनासँ एतय प्रक्षिप्त भ' गेल अछि। धनुर्वेदक दू शाखा अछि; सूर्यवंशमे प्रचलित ओ सोमवंशमे प्रचलित, ताहि दूनू प्रकारक धनुर्वेदमे नायक कुशल छथि। ओ आठ उपसिद्धि तथा आठ प्राकृत सिद्धि तथा महासिद्धिमे कुशल छथि। ज्योतिरीश्वरक युगमे तन्त्र बड़ प्रचलित छल तेँ राजा सेहो तन्त्रज्ञ रूपमे वर्णित छथि।

21·8—शर · शुल······लीनबन्ध · चट···।

नायक छत्तीस प्रकारक आयुद्ध चलब' जनैत छथि ओ अश्वशिक्षा आदिक ज्ञाता छथि।

टि—एत' छत्तीसमे केवल बारह उल्लिखित अछि। आयुद्ध दू प्रकारक होइत छल ; जे हाथसँ पकड़ि चलाओल जाइत छल से पालायुध तथा जे हाथसँ फेंकि चलाओल जाइत छल से दण्डायुध कहबैत छल; जे सम्प्रति क्रमशः शस्त्र ओ अस्त्र कहबैत अछि। छत्तीस दण्डायुधक चर्चा [४४ ख]मे सेहो आयल अछि। एहिमे सब्वन छाड़ि सभ संस्कृत कोशमे भेटत। चूडामणि एक फलितज्यौतिष तथा एक संगीत ग्रन्थक नाम थिक; एहिना हरमेलखा सेहो एक ग्रन्थ थिक। सान्तन ओ लीनबन्ध अनुसन्धेय। एत' वाक्य पूर्ण नहि भेल अछि।

21·15—सीनता · दुर्ग·······सम्पूर्ण शिष्ट देषु॥

शिष्ट (दरबारी) लोकनि दुर्गरक्षा आदि चौरासी राजनीतिक ज्ञाता छथि; दया-दानादि शिष्टोचित गुणसँ युक्त छथि, तथा सात्त्विक आदि तेरह उपनायक-गुणसँ युक्त छथि।

टि—राजाक वर्णनक बाद हुनक शिष्ट (पर्सनल स्टाफ) लोकनिक वर्णन आयल अछि। पहिल शब्द खण्डित अछि, जे सम्भवतः उदासीनता थिक। चौरासी राजनीतिमे केवल उन्नैस बचल अछि। सभ संस्कृत शब्द थिक ओ कोशमे भेटत।

22·5—[अथ नायिका] वर्णना······ सुरक्त सा···।

नायिकाक चरण उज्ज्वल आदि पाँच गुणसँ युक्त अछि; ओकर दूनू जाँघ चिक्कन, कोमल, हाथीक सूँढ़-सन अछि; ओकर नितम्ब पुष्ट, मांसल ओ काछुक पीठ-सन अछि; ओकर नाभि गँहीर···अछि; ओकर बेकण्ड (कटि) पातर, कोमल, गोल एहि तीन गुणसँ युक्त मात्र मुट्ठी भरिक अछि; ओकर रोम-लता कारी, मसृण, कोमल छओ गुणसँ युक्त अछि; ओकर दूनू स्तन निम्मुर्ख (?), सटल-सटल (निरन्तराय), पुष्ट, कठोर, उँचगर ओ गोल अछि; ओकर बाहु विशाल, गोल ओ कमल-नाल-सदृश अछि; ओकर हाथ कोमल, रक्ताभ, निर्मल, ललित, ललका अशोकक पल्लव-सन अछि; ओकर ग्रीवा तूर-सन कोमल ओ तीन रेखा (त्रिवलि) सँ युक्त छैक; ओकर कान कोमल, वक्र, कुण्डलाकार ओ सोनाक गहनासँ युक्त अछि; ओकर दाँत सम····अछि।

22·17—खुटी · सिङ्कली·······चतुर्भुज भए गेलाह।

नायिका खुटी आदि गहना पहिरने अछि। ओ केहनि अछि ? जेना कामदेव जे

संसार जीति अयलाह तकर विजयवैजयन्ती हो; मानू एकरे रूप देखबा लय इन्द्र सहस्राक्ष भेलाह, ब्रह्मा चतुर्म्मुख भेलाह, ओ कृष्ण एकरे आलिङ्गनार्थ चतुर्भुज बनलाह।

टि--एहिमे बारह गोट गहनाक नाम अछि। खुटी—सम्प्रति खुट्टी कहबैत अछि जे एखनहु महिला कानक ऊर्ध्वभागमे पहिरैत छथि। सिङ्कली—सिकड़ी। चुलि—चूड़ि। त्रिका—माँग-टीका। सवन—प्रायः सवरब पाठ थिक। देयकें—अशुद्ध पाठ थिक, देखिकें चाही।

23·1—अथ सखीवर्ण्णना······श्यामा जाति सखी।

नायिकाक सखीक मुह लगैत छनि जेना अमृतसँ भरल पूर्णिमाक चन्द्रमा हो।··· खोपा (षोम्पा) लगैछ जेना नर्मदाक शिला (करिआ पाथरक शिवलिङ्ग) फूलक मालासँ पूजल गेल हो। अधर प्रवालक पल्लव (मूँगा) सन छनि। नाक कनैलक फल (कनिअराक फर) सन छनि। दाँत लगैत छनि जेना सिन्दूरमे लोटायल मोति हो (मिलाउ, विद्यापति—सीँदुर सीप लोटाएल मोति)। बेँतक सट्टा सन बाँहि।··· सोहल समतोला-सन स्तन। अङ्गक वर्ण (आंगक बान) काँच बरड़ी (कमलबीज) सन छनि। बेकण्ड (कटि) डमरुक मध्य भाग-सन छनि·····।

23·13—अपरः प्रकारः ॥······जाति नायिका।

टि—खञ्जरीट [२३·१७] खंजन-पक्षी। कन्दल—अनुसन्धेय। साँकर—चीनी, तकर शलाका, गुलाबछड़ी। बिरनी—वेणी, जुट्टी। स्वतः पाकि क' विदीर्ण भेल दाड़िम-सन दाँत। लाल कमल-सम·····एहिसँ आगाँ एक पन्न लुप्त अछि। [२४·१] ओकर आँखि खंजन-युगल-सदृश छैक। भौँह टेढ़, ऐँचल, घन, कारी, पँघ, कामदेवक धनुषसन छैक। कनपट्टी चौरस ओ चारि आँगुर चाकर छैक। सीउँथ सुन्दर, निराल (?), चकचक (सफुर), सोझ, चिक्कन; (मसृण), ओ सिन्दूरक रेखा (दण्डिका)सँ अलंकृत छैक। केशपाश सुरभि····छैक। ओ सुशीला अछि, लज्जावती···· अछि; अतः ओ सभ तरहेँ चित्रिणी जातिक नायिका भेलि।

24·9—अपरः प्रकारः ॥····· त्रिभूवनमोहिनी देषु ॥

स्वर्गमर्त्य····· —ई वाक्य किछु गड़बड़ अछि। भाव ई अछि जे स्वर्ग, मर्त्य ओ पाताल तीनू भुवनक सौन्दर्य एकत्र क' विधाता विश्वकर्मा द्वारा एक अपूर्व नायिका रचबओलनि, जकर मुखक शोभा देखि पद्म पानिमे पैसि गेल;·····। तालिबें (दालिवें)--दाड़िम। कम्बु—शङ्ख। पन्नु—पद्म, कमल। रत्ना····(रत्नालङ्कार)।

24·21—अपरः प्रकारः ॥·······भद्राजाति नायिका देषु ॥

तारुण्य अंकुरित भेलैक। बाल्य बीति गेलैक। अभिलाष (वासना)जगलैक। लाज

आबि गेलैक ।'''एहन नायिकाकेँ देखू । तकरा कानमे रत्नयुक्त कुण्डलद्वय केहन लगैत अछि जेना कामदेवक रथमे दुइ पहिया जोड़ल हो । डाँड़मे सोनाक सिकड़ी बान्हल केहन लगैत अछि जेना सौन्दर्यक तुलापुरुष काञ्चन तौलबाक हेतु डोरीसँ बान्हल गेल हो । विचित्राम्बर (छीट)क फुरहुरा (ओढ़नी, घोघट ?) केहन लगैत अछि, जेना स्वर्णपर्वतशिखर पर मयूर नचैत हो । आगाँ स्पष्टे अछि ।

25·13—अथ नायिका हास्य''' 'द्वितीयः कल्लोलः ।।

नायिकाक हास केहन लगैत अछि ? जेना कुमुद'' ओ पीयूषक कान्तिक प्रसार हो,'''युवजनक हृदयक मोहनमन्त्र हो, स्वेद आदि आठो सात्विक भाव (कामविकार)क भण्डार हो,'''योगिजनक प्रणिधान हो, कामदेवक बाणमे जे मादन आदि पाँच गुण छनि तकर जेना सन्धान-शक्ति हो । मोहनता आदि रस जगबैत, तीनू लोककेँ वशमे करैत नायक-लोकनिमे हास्यक संचार करैत नायिकाक हास देखू ।

तृतीय कल्लोल

26 . 7—अथ स्थानवर्णना''''''राज' देषु ।

आब आस्थान अर्थात् राजाक आम दरबारक वर्णन कयल जाइत अछि । दरबार भूपाल आदि अनेक लोकसँ शोभित अछि । तनिका लोकनिक बीचमे सर्वगुणसम्पन्न राजा सिंहासनपर बैसल छथि ।

टि—स्थान नहि, आस्थान पाठ चाही । अनुक्रमणीमे आस्थान शब्द देखू । **भूपाल, माण्डलिक, सामन्त**—ई तीनू राजाक अधीनस्थ शासक थिकाह, जे उत्तरोत्तर अल्प अधिकारवाला प्रतीत होइत छथि । **वैशिकमे** दे छूटल अछि, **वैदेशिक** थिक, आ' अनुक्रमणीमे अछिओ सैह , ई सम्भवतः परराष्ट्रमन्त्री नहि, विदेशसँ आयल प्रतिनिधि थिकाह । **राजपुत्र**—एतय राजाक बेटाक नहि, राजदरबारक कोनो शासकीय वा' सैनिक अधिकारीक अभिधान थिक, जकर कृत्य पूर्वमे राजाक बेटा करैत होयताह । एहि कालमे एकर अनेक अपभ्रंश प्रचलित अछि, यथा **राउत, राओत, रावत, रौत,** जे स्पष्टतः सैनिक पदाधिकारी होइत छल । एकरा सभक मुखिया एहिमे आगाँ **रौतपति** कहल गेल अछि । **राजशिष्ट**—राजाक दरबारी वा मोसाहेब लोकनि । हिनक गुणवर्णन पूर्वमे [२१ . १५] आयल अछि । **पुरपति**—नगरक मुखिया । एकरे अपभ्रंश थिक पुरबइ (**पुरबे**), जे आगाँ आओत । **सेवक**—सामान्य कर्मचारी थिक ; किन्तु **परिचारक**—गृहभृत्य वा टहलू । एहिमे **मण्डलीक, सामन्त, राजपुत्र**